धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

नवम्बर - 2010

* *महोत्सव मुबारक निकट आ रहा है*

* अपनी परिस्थिति का अनुभव

* उच्च असूलों और हितकारियों के सम्बन्ध में

* खून से खेलना धर्म

* *मानवता के गौरव*

* *लोकतन्त्र का बिगड़ता चेहरा*

* मुबारक हो

* शुभ संग्राम

महोत्सव मुबारक निकट आ रहा है

इस वर्ष भी पिछले वर्षो की तरह परम पू० भगवान देवात्मा का शुभ जन्म महोत्सव, 20, 21, 22 और 23 दिसम्बर को शुभवती धर्मशाला में धूम धाम से मनाया जाएगा। परम पू० भगवान देवात्मा की अद्वितीय शक्तियों वा अनुपम योग्यता, वह मनुष्य की सूरत में देव सीरत लेकर 170 वर्ष पहले हुआ। उन्हेंने इस संसार में आए और सत्य और शुभ के पूर्णाग अनुरागी, झूठ और बुराई के पूर्णाग शत्रु होकर सचाई और भलाई को लाने और झूठ और बुराई को मिटाने का बीड़ा उठाया। और धर्मो की तरह वह पापियों को मारने और भक्तों को तारने नहीं आए बल्कि पापियों के पापों को मिटाकर उन्हें भले हितकर इन्सान बनाने के लिए आए। उनके सम्पर्क से ही हम मोटे मोटे पापों से बच सके हैं, हमारी मिथ्याएं गई हैं, हमें विज्ञान मूलक वह शिक्षा प्राप्त हुई है, जिससे बड़े बड़े विद्वान वचिंत हैं। हमारा आत्मिक अन्धेरा कुछ अंश दूर हुआ है। हमें यह कम से कम मान्सिक ज्ञान तो प्राप्त हुआ है कि हमें कोई ईश्वर वा परमात्मा नहीं चलाता बल्कि हमारे भीतर की शक्तियां चलाती हैं। हमें नेक बनने के लिए किसी ईश्वर की अराधना की आवश्यकता नहीं बल्कि अपने भीतर की पाप शक्तियों को जानने की अवश्यकता है। वह अपनी अलौकिक ज्योति अधिकारी आत्माओं तक पहुंचाकर उन्हें उन पाप शक्तियों की भयानक तस्वीर दिखाते हैं और अपने बल से उन्हें उनसे मोक्ष देने की समर्थ्य रखते हैं। गुरू की कृपा से हमारे घरों का नर्क दूर हुआ है, हमें नेक सन्तान, अच्छे पति और पत्नी, अच्छे भाई बहन, अच्छे पड़ोसी मिली, अच्छे देशवासी बनने की प्रेरणाएं मिलती हैं। किसी हद तक हम बने भी हैं। ऐसे हमारे बचावनहार सत्गुरू का जन्म दिन है। उस पर अभी से हम धूमधाम से आने की तैय्यारी करें और चावभाव से यह दिन मनाने वा यहां आकर परम पू० भगवान देवात्मा के प्रभावों को पाने के प्रयत्न में लग जाएं। इन दिनों को गुरू के उपकारों को याद करने, उनकी महिमा को देखने, उनके ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए समय निकालें, तभी हमारे दिल कुछ सरस होंगे और यहां आकर अपना भला कर सकेंगे।

साडा देव उत्सव है आया, सानूं खुशियां चढ़ीयां जी,
मिल सी देव गुरू दा प्रसाद, जिस दियां लोड़ा वड़ीयां जी

(सुरजीत बराड़)

धर्म जीवन

खण्ड 23 अंक 11

नवम्बर - 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अपनी परिस्थिति का अनुभव

मनुष्य प्रकृति सुख परायण है और दूषित है। सुख की भिन्न भिन्न लालसाओं की मनुष्य हृदयों में भरमार है। कोई मनुष्य ऐसा नहीं, न ही हो सकता है और न हुआ है, जिसमें सुख की लालसा न हो। सुखों की लालसा ही मनुष्य को पाप और बदी परायण, झूठ परायण और हानि परायण बनाती है। सुख लालसाएं मनुष्य के भीतर गहरा अन्धेरा पैदा करती हैं। मनुष्य को अक्लमन्द होकर, बुद्धिमान होकर, लेखक होकर, अमीर होकर पद प्रभुत्व रखकर और गौरवशाली होकर, उसे अपने सच्चे वा प्रकृत भले का ज्ञान नहीं होता और न हो सकता है। कहां अपना भला है, लाभ है, कहां भलाई है उसे वह स्वयं आंक नहीं सकता। सुख oriented मनुष्य के लिए यह सम्भव ही नहीं। अपने लाभ हानि को जान तो सकता है, परन्तु उसका सच्चे अनुभव से वचिंत रहता है। इसी कारण बड़े बड़े महारथियों के जीवनों के भीतर आए दिन भुचाल आते रहते है। दुख और नाश के दृष्य इस विस्तार से प्रगट होते हैं कि जिन्दगी के सफर में कौन कौन से दुख के स्टेशन आएंगे उनका अन्दाज़ा भी नहीं होता।

जिस प्रकार (Alfanjo) अलफैंजो आम जो विश्व प्रसिद्ध है, उसकी गुठली किसी हाईवे पर पड़ी हो, उसे अपनी नाशवान परिस्थिति का कुछ पता नहीं। वह नहीं जानती के मेरी सब योग्यताए, मेरा अस्तित्व चटनी की तरह पिसने वाला है। उसका स्पष्ट ज्ञान उसे नहीं हो सकता।

5-7 दिन का कुत्ते का बच्चा किसी चौराहे पर खेलता है, उसे लगता है कि खेलने के लिए खुला मैदान मिल गया है। वह जिसे मौज समझता है, वह परिस्थिति उसे कुचल देगी, उसका उसे ज्ञान नहीं। यही हालत सधारणत: मनुष्यों की होती है। केवल अनपढ़, गंवार ही इस अन्धेरे के शिकार नहीं होते। बहुत योग्य, पढ़े लिखे, मुल्कों सल्तनतों के मालिक, महान प्राप्तियां करने वाले, माहिर और चतुर भी अपनी चालक शक्तियों और उनके घातक, मारने वाले नाशवान वा दुखदाई स्वभाव से पूर्णता बेसुध होते हैं, और रहते हैं। अपने हृदय के अन्धकार से वह पूर्णता अज्ञानी रहते हैं। कई बहुत ही होनहार और योग्य जवानियों का दुखांत भरा नाश आए दिन होता रहता है। इनसे हमारे समाचार पत्र भरे रहते हैं। इसी कारण संसार को दुखों का घर कहा जाता है।

शहद की चाट के लिए भटकती मक्खी शहद देखकर उस पर बैठकर उसका स्वाद तो ज़रूर ले लेती है और उसके सुख में इतनी बेसुध हो

जाती है कि अपने सारे पंख उसमें लिपटा लेती है, वह अपनी परिस्थिति को देखने के योग्य ही नहीं रहती और फिर उड़ नहीं सकती और तड़प तड़प कर मर जाती है। आई तो थी शहद खाने और सुख प्राप्त करने परन्तु अपनी जान गंवा बैठती है।

कसाई के हाथ में हरा चारा देखकर उसको खाने के सुख के लिए वह खुशी खुशी कसाई के पीछे भागा जाता है, परन्तु चन्द डालें खाकर जान गंवा बैठता है। उसको हरा चारा तो दिखाई देता है, परन्तु अपनी जान की घातक परिस्थिति को नहीं देख सकता।

उच्च लोक वासी श्रद्धेय श्रीमान कनल जी ने भगवान देवात्मा की रोशनी में खूब देखा था कि मनुष्य ज्वालामुखी पर्वत के मुंह पर लम्बी तानकर सोया हुआ है, उसे अपनी विनाश भरी, अति भयानक परिस्थिति का कोई ज्ञान नहीं। किसी भी समय लावा फूट सकता है और आग का दरिया उसे बहाकर ले जा सकता है।

शेर, चीते, गिद्ध, हाथी बंदर सब को मनुष्य उनके सुख की चाट देकर पकड़ लेते है, उनके नत्थ डालकर लगाम डाल कर अपना गुलाम बना लेते हैं।

मनुष्य भी पशुओं से ही विकसित हुआ है, उसकी मनोवृति भी वही है, वह तुच्छ सुखों का रसिया है, परन्तु जगह जगह दुख और विनाश के घेरे में फंसा हुआ दिखाई देता है। मनुष्य का यह हाल सदियों से हो रहा है और आगे सदियों तक होता रहेगा, जब तक उसे अपने पर हावी सुख लालसाओं की भयानकता का स्थाई बोध नहीं हो जाता।

इन्ही सुख लालसाओं के अन्धकार में उसने ईश्वर वा अन्य देवी, देवता घड़े हैं। उनकी भक्ति द्वारा अपने जीवन की गुंझलदार समस्याओं का हल ढूंडने में सदा असफल रहा है। इसीलिए संसार दुखों का घर बना हुआ है। जैसे गुड़ वा रोटी के प्रति गूढ़ आकर्षण रखने वाले चूहे, पिंजरे में पहले से ही फंसे हुए चूहों की भयानक दशा देखकर भी कोई सबक नहीं सीखते, उसी प्रकार सदियों से अपने नीच सुखों की लालसाओं के हाथों बुरी तरह आघात पाए हुए मनुष्यों को देखकर भी कोई मनुष्य कोई सबक नहीं सीखता। नशों के सागर में लाखों करोड़ों मनुष्य पहले ही गरक हो चुके हैं, परन्तु आज उससे भी करोड़ों गुणा अधिक मनुष्य नशों में डूब रहे हैं। जैसे पहले लिंग तृष्णा की भेंट लाखों ज़िन्दगियां चढ़ चुकी हैं, उससे भी बहुत बड़े पैमाने पर अब मनुष्य, नौजवान, बच्चे तक तबाह हो रहे हैं। जैसे पहले धन, धरती के लोभ से बहुत फसाद होते रहे हैं, पिता, पुत्र, भाई भाई, नज़दीकी सम्बन्धियों में खून खराबा वा कोर्ट कचहरियों में धक्के खाते रहे हैं अब उससे भी कई गुणा बढ़कर ऐसे हालात देखने को मिलते हैं।

जैसे पहले मनुष्यों के सम्बन्धों में महा भारत होते रहे हैं, वैसे ही घर घर, पति पत्नी, भाई भाई बाप बेटा और निकटी सम्बन्धियों में महा भारत देखने को मिलता है।

जिस परिस्थिति में मनुष्य सदियों पहले अनपढ़, ज़ाहल, गंवार होकर रेलों, कारों, हवाई जहाजों, समुन्द्री जहाजों से अनजान होकर, स्कूलों, कालिजों के ज्ञान से अनभिज्ञ रहकर, टैलीफोन, टी. वी, कम्पूटर, सैलफोनों के ज्ञान से बिल्कुल कोरा था, अब ज़िन्दगी के अन्य पहलुओं में उसी परिस्थिति में और इसी में रहने के लिए मज़बूर है।

मनुष्य का धर्म, उसके धर्म ग्रन्थ, गीता, पुरान वेद, कुरान, बाईबल आदि इसमें मनुष्य की

कोई सहायता नहीं कर सके और न ही कर सकते हैं।

देव समाज के महान क्रांन्तिकारी घरानों के बच्चे भी जब अपनी मर्ज़ी से चलते हैं, अपनी सुख लालसाओं के द्वारा महा भयानक दृष्टांत पैदा करके दुख और नाश में घुल घुलकर नाश को प्राप्त करने के लिए मज़बूर हैं।

देव समाज के प्रभावों द्वारा बने फरिश्तों जैसी हस्ती के परिवार में जन्में, एक सुन्दर, 6 फुट लम्बे सुजैल नौजवान B.A. पास, बहुत अच्छी नौकरी पर लगे हुए, बहुत बड़े घराने में शादीशुदा, 2 - 3 बच्चों के बाप, अपनी वासनाओं की भयानकता से पूर्ण बेसुध, एक ऐसी युवती के चक्कर में फंस गए, जहां उसकी विनाशकारी वासनाओं की तृप्ति के सामान थे, मजनू की तरह उसके दर पर ही ढेरी हो गए। घर घाट, माता पिता, पत्नी बच्चे, ऊंची नौकरी, जिसमें वह सारे सूबे का मालिक बनने की योग्यता रखते थे, तनख्वाह वा पैंशन तक लेने की, नौकरी पर जाने की और किसी के दुख सुख को जानने की सारी सूझ बूझ गंवा बैठे। उसी स्त्री के दर पर 10 - 12 वर्ष पड़े रहे और दुख, संताप, अपनों से जुदाई, डप्रैशन के शिकार होकर इस दुनियां को अलविदा कह गए। उसकी अवस्था वा वियोग ने किस किस को, कितना कितना दुख दिया, उसका एहसास तक न रहा।

मनुष्य को सही परिस्थिति, हालात वा अवस्था को उस पर राज करने वाली सुख लालसाएं ही निर्मित करती हैं। कोई मनुष्य अपने पर हावी सुख लालसा का प्रकृत ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने के योग्य नहीं। न ही किसे धर्म, पीर, पैगम्बर, गुरू पीर के पास इन लालसाओं वा परिचालक शक्तियों को दर्शाने के लिए कोई सामान है। इस पक्ष में इन्सान सदियों से अन्धा ही चल रहा है और उसे अपने अन्धेपन को मक्खी, पिल्ले, बकरे की तरह कोई एहसास नहीं है। हां, एक एक सुख लालसा की गुलामी को जानकर भी, उसकी बर्बादी के घाटे को आंखों देखकर भी मनुष्य बहुत चाहकर भी उससे पीछा नहीं छुड़ा सकता।

गालब महान आलम और शायर हो गुजरे हैं, उनका वृतांत सारी मानवता की हालत को दर्शाता है, उन्होंने स्वंय अपने बारे में फरमाया है -

"गालिब तुम्हें पैगम्बर समझते, ग़र न बादाखोर (शराबी) होता"। अर्थात मुझे लोग वली वा पैगम्बर की तरह पूजते, यदि में शराब ख़ोर न होता + सब कुछ जानकर भी आख़िर वह फटे हाल, भिख़ारी वा कर्ज़े के नीचे दबा हुआ, मुकदमों में पिस पिस कर संसार से विदा हो गया।

पहले तो लाखों, करोड़ो, अरबों मनुष्यों को अपनी चालक सुख लालसा का कोई पता तक नहीं और जो किसी एक लालसा का किसी किसी मनुष्य का पता भी लग जाता है, वह अपने आप मुक्त होने के योग्य नहीं है। कैसी तरसनाक अवस्था! ऐसी कृपा पात्र अवस्था से अधिकारी मनुष्यों को निकालने के लिए नेचर के लिए धीरे धीरे, उचित और यथेष्ट सामान पैदा करने अवश्यक थे। मनुष्य के विकास क्रम में नेचर आखिर एक ऐसी अद्भुत मनुष्य हस्ती को, परम पू० भगवान देवात्मा के रूप में पैदा किया, जो हर प्रकार की सुख लालसाओं की गुलामी से पूर्ण मुक्त होने और रहने की योग्यता लेकर आए। उन्होंने शुभ अनुरागों और सत्य अनुरागों को विरासत में बीज रूप में प्राप्त करके उनका विकास किया। उन्होंने नई रोशनी को विकसित किया जो मनुष्य की लालसाओं और भावनाओं को रोशन करने के लिए पूरी तरह सक्षम

है। नीचता के प्रति घृणा, शत्रुता और दुख भरे तेज का भी कमाल दर्जे विकास किया। परम पू० भगवान देवात्मा की ज्योति के भीतर मनुष्य को अपनी हाकिम सुख लालसाओं को देखने की सामग्री प्राप्त हो गई। सदा सदा अन्धा रहने वाले मनुष्य के लिए आंखों का सामान मिल गया। भगवान देवात्मा के अद्वितीय तेज के भीतर मनुष्यों की नीचता से निजात का भी पूरा सामान मिल गया। धरती पर एक नये युग का आरम्भ हुआ।

परम पू० भगवान देवात्मा की अद्भुत ज्योति को पाकर अधिकारी मनुष्य अपनी मनोवृतियों को और उनकी गुलामी से बचने की सामग्री को प्राप्त होने लगे। अन्धों को आंखें मिलने लगी और असाध्य रोगी रूहों का ईलाज का सारा साज सामान प्राप्त होने लगा। अधिकारी रूहों के भाग खुल गए। परम पू० भगवान देवात्मा की अद्भुत ज्योति में मनुष्य यह देखने के योग्य हो गया है कि मुझे मेरी सुख लालसाएं चलाती हैं। वह मेरे बनने और बिगड़ने की स्थिति की सृजना करती हैं। वह यह देखने के योग्य हो गया है कि मुझे अपनी सुख लालसाएं स्वंय दिखाई नहीं दे सकती। इस पहलु में मैं असमर्थ हूं। भगवान देवात्मा की रोशनी के बिना मुझे अपनी सुख लालसाओं का भयानक रूप दिखाई नहीं देता है। सारी मानवता ही इस पहलु में अन्धा रहने के लिए बेबस है।

ज्यों ज्यों अधिकारी मनुष्य भगवान देवात्मा की ज्योति पाने के योग्य बनता जाता है, उसे यह पता लगता जाता है कि मेरी सुख लालसाएं मुझे किस तरफ ले जाती हैं और उससे मेरा क्या हशर होगा। इस अति आवश्यक विवेक से मनुष्य विनाश मार्ग से बचने और जीवन मार्ग पर चलने के लिए अपनी योग्यतानुसार प्रेरित होता है।

अन्धी और मरती रूहों को अपने बचने के सामान मिल गए। डाक्टर हरनाम सिंह जी, सरदार हरनाम सिंह जी, श्रीमान नौध सिंह जी, श्रीमान पंडित नेत राम जी जैसी हस्तियों को अपनी हालत का ज्ञान मिल गया और वह देव औषधि की प्राप्ति से कोयले जैसे जीवन को साफ करके हीरे बनने के योग्य बना गए। श्री नेत राम जी भजन गाने लगे: -

"लोको नीच शक्तियों बुरीयां सानू मार दियां"

बलदेव सिंह

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

उच्च असूलों और हितकारियों के सम्बन्ध में गहरी वफादारी की ज़रूरत

सुखार्थी मनुष्य सधारणत: न उच्च असूलों का साथी रहता है और न उच्च और हितकारी सम्बन्धियों के साथ गहरी वफादारी की विशेषता को अनुभव करता है। उच्च असूलों के साथ वफादारी नीच सुख अनुरागी से कई नीच सुख अनुरागों की कुर्बानी चाहती है। जब तक किसी उच्च सिद्धान्त के साथ गहरा प्रेम न हो, तब तक उसके लिए वफादार रहना करोड़ों मनुष्यों के लिए असम्भव है। भारत वर्ष के बड़े बड़े मशहूर लीडर अपनी नीच बिरादरी की विरोधिता की ताब न लाकर अपने उच्च सिद्धान्तों का त्याग करते रहे हैं। समुद्र पार यात्रा को ठीक समझ कर जब उन्होंने समुद्र पार यात्रा की और वापिस आए, तब उन्होंने नीच बिरादरी के दबाव में आकर प्रायश्चित किया। एक-एक विधवा विवाह के नामी गिरामी सुधारक ने समय आने पर अपने जीवन के सिद्धान्तों को बुरी तरह से त्याग दिया और खुद रंडवा होकर एक कुमारी लड़की से विवाह किया। एक और नामी गिरामी भारत के सुधारक ने जो रात दिन परमात्मा के साथ योग की हालत में रहता था और जिसने अपने जीवन का बड़ा भाग बचपन की शादी की बुरी प्रथा को दूर करने के लिए आंदोलन पैदा करने में व्यतीत किया था, अपने जीवन के इस उच्च नियम को तब ही त्याग दिया, जब उसको अपनी छोटी उमर की कन्या के लिए एक छोटी उमर के युवराज के साथ शादी करने का प्रलोभन आया। जो जो जन उच्च सिद्धान्तों के साथ किसी कारण से भी बेवफा साबित होते हैं, वह अपने जीवन को पतित बनाते हैं। और उच्च सिद्धान्तों से गिरकर औरों की भी बहुत हानि करते हैं। जीवन के उच्च सिद्धान्त आत्मिक जीवन के जीवन दायक नियम हैं, उनका उल्लंघन जीवन के नियमों का उल्लंघन करना है। इसलिए मृत्यु की राह पर जाना है। इसके भिन्न उच्च सिद्धान्तों के साथ वफादार रहने में मनुष्य का आत्मिक बल बढ़ जाता है और ऐसा एक-एक मनुष्य मिसल पहाड़ के खड़ा रहकर सैकड़ों और हजारों को उत्साहित करता है, और उच्च सिद्धान्तों के लिए स्थिर रहने में मद्दगार साबित होता है। ऐसे उच्च सिद्धान्तों के साथ वफादार जन ही विश्वास के पात्र साबित होते हैं और अपनी समाज और जाति के लिए गौरव की वस्तु प्रमाणित होते हैं।

जितने दरजे कोई अधिकारी जन किसी भी सत्य और किसी भी शुभ के सम्बन्ध में बोधी होता जाएगा और उस पर मोहित होता जाएगा, उतने दरजे ही वह उनके सम्बन्ध में वफादार प्रमाणित हो सकेगा और जितने दरजे वह सत्य और शुभ की तुलना में सुख का बोधी और प्रेमी बनता जाएगा उतने दरजे वह उनके सम्बनध मे बेवफा बनता जाएगा। इसलिए उच्च सिद्धान्त के साथ वफादार रहने वाले प्रत्येक जन के लिए यह आवश्यक है, कि वह ऐसे उच्च मंडल में वास करे, जहां सत्य और शुभ के सम्बन्ध में बोधी और प्रेमी बनाने का काम होता हो और ऐसे जन को सब से बढ़कर सत्य और हित के पूर्ण अनुरागी भगवान् देवात्मा के साथ अपना जीवन्त सम्बन्ध स्थापन करना चाहिए।

उच्च सिद्धान्तों के साथ वफादार रहने के भिन्न प्रत्येक अधिकारी जन का यह कर्त्तव्य है, कि वह अपने रक्षाकारियों और हितकारियों के प्रति वफादार रहने के आवश्यकता को उपलब्ध करे। सुखार्थी मनुष्य की यह बहुत दुर्बलता है, कि वह हितकारियों को भूल जाता है। वह बड़े-बड़े उपकारियों को भूल जाता है।

यहां तक कि वह बहुत बड़े रक्षाकारियों को भी भूल जाता है। अब जहां से हम हित पाते हैं, यदि उन्हीं को हम भूल जाएं, तो हमारा कितना महा दुर्भाग्य!!

सुखार्थी मनुष्य साधारणत: कान के बहुत कच्चे होते हैं, वह बड़े-बड़े उपकारियों के विरूद्ध सुनी सुनाई बातों से उत्तेजित होकर उनके शत्रु बन जाते हैं। यह इसलिए होता है, कि सुखार्थी जन शुभ को लेकर नहीं चलते। हितकारियों की कीमत को अनुभव नहीं करते। निन्दा करने वाले जन के साथ सम्बन्धित होने के कारण बड़े से बड़े हितकारी जन से भी फट जाते हैं। यह कान के कच्चे नेचर में किसी सम्बन्ध में भी विश्वास के पात्र नहीं होते। और जिस सबसे बड़े नुकसान के वह भागी बनते हैं, वह यह है, कि उनके आत्मिक कल्याण का दरवाजा बन्द हो जाता है। और जिस अपने बहुत बड़े हितकारी से कुछ उपकार पा सकते थे, उस उपकार से भी वंचित हो जाते हैं। अब किसी मनुष्य के लिए लगातार हित का द्वार तभी खुला रह सकता है, कि जब वह एक ओर उच्च सिद्धान्तों के साथ वफादार रहने की सामर्थ्य लाभ कर सके और दूसरी ओर अपने बहुत बड़े हितकारियों के साथ अटूट सम्बन्ध स्थापन कर सके। बेशक हम किसी भी विशेष जन के जीवन का अध्ययन करें, तो हमें यह साफ मालूम होगा, कि विशेष जन वहां तक ही विशेष बन गए, जहां तक उनमे उच्च सिद्धान्तों के लिए वफादारी का भाव उत्पन्न हुआ और बढ़ता गया और अपने सच्चे हितकारियों के साथ उनका सम्बन्ध दिनों दिन गहरा और दृढ़ होता गया। यह दो प्रकार के सात्विक भाव हर मनुष्य आत्मा को सतीपन की सुन्दर पदवी प्रदान करते हैं। मुबारक हैं ऐसे सात्विक भावधारी जन!

(पी. वी. कनल)

शोक समाचार

1. बहुत शोक कि श्रीमती इन्द्रा जी अग्निहोत्री 13 अक्तूबर को अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर परलोक सिधार गई। गुरू महाराज के बड़े साहिबज़ादे श्रद्धेय पंडित हरनरायण जी अग्निहोत्री थे, जिन्होंने परम पू० भगवान देवात्मा के रूप को पहचाना था और उनके लिए गहरी श्रद्धा रखते थे। गुरू महाराज के विशेष विद्वान, फिलासफर और, ज़ोरदार प्रचारक थे। उनके बड़े सपुत्र श्रीमान सुबोध कुमार जी अग्निहोत्री की यह धर्म पत्नी थी। पति के देहान्त के बाद फिरोज़पुर कालिज में बतौर वार्डन बड़ी सुन्दर सेवा करती रहीं। आख़िर वह अपनी छोटी सपुत्री विजय लक्ष्मी 366-सैक्टर 44 ऐ में रहने लगी। आपकी उमर 78 वर्ष की थी।

आप परम पू० भगवान देवात्मा की श्रद्धावान सेविका थी। आप गुरू परिवार की एक सुघड़ सुजान स्त्री थी। आप पीछे अपनी तीन बेटियां छोड़ गई हैं।

आपका दाह संस्कार देव समाज की विधि से 13 अक्तूबर को किया गया, जिसमें बहुत सारे सामाजिक और परिवारिक जन शामिल थे। आपके सम्बन्ध में आख़री श्राद्ध की सभा 24 अक्तुबर को देव समाज भवन 36-बी में रखी गई है। हम उनकी आत्मिक शान्ति की और परिवारिक जनों के धीरज के लिए हार्दिक कामना करते हैं।

बलदेव सिंह

खून से खेलना धर्म

भारतीय संस्कृति में धर्म और अंधविश्वास इस कदर लोगों के दिलोदिमाग में बसे हुए हैं कि वे आंखें बंद कर के आस्था के नाम पर कुछ भी कर गुजरते हैं। हिंदू मान्यताओं के अनुसार कुछ देवी देवताओं को खुश करने का तरीका केवल रक्त यानी खून बहाना बताया गया है। पशु बलि से ले कर इनसानी खून तक इस्तेमाल पत्थर की मूर्तियों को खुश करने में किया जाता है। वैसे इन मान्यताओं को कोई ठोस आधार भले ही न हो मगर लोग इसे जीवन का एक हिस्सा मानते हैं। इस के अलावा शरीर को कष्ट पहुंचा कर अपने अपराध में आस्था दिखाना भी हिंदू मान्यता का ही एक अंग है। लोग बीमारी के इलाज से ले कर सुखशांति पाने तक के लिए किसी भी हद तक जा कर अपने अपने भगवान को खुश करने की कोशिश करते हैं और यह सब होता है अंधविश्वास के चलते। पंडेपुजारी आम जनता को भगवान के नाम पर जम कर फुसलाते हैं। देवी-देवताओं का प्रकोप बता कर लोगों को भयभीत कर उन की अंधी आस्था से खिलवाड़ करते हैं।

उत्तराखंड के चंपावत जिले के देवीधुरा गांव में भी कुछ ऐसी ही परंपरा है। यहां बगवाल मेले का आयोजन किया जाता है। बगवाल पत्थर फेंकने को कहा जाता है। इसलिए इस मेले को बगवाल मेला कहते हैं। मान्यता के अनुसार हर साल रक्षाबंधन के दिल यहां के वाराहीदेवी मंदिर के पास अलगअलग जाति और समुदाय के लोग जमा होते हैं और 2 गुटों में बंट कर एकदूसरे पर पत्थरों से हमला करते हैं। यह मेला 13 दिन तक चलता है, लेकिन रक्षाबंधन के दिन यहां खासा उत्साह देखा जाता है। इस बगवाल कार्यक्रम में दोपहर के समय 10-15 मिनट के लिए यह खूनी खेल खेला जाता है।

परंपरा के अनुसार लोग एकदूसरे पर पत्थर फेंक कर एक इनसान के खून के बराबर खून बहाते हैं। कहा जाता है कि देवी ने जब देवीधुरा के जंगलों को 52 हज़ार वीर और 64 योगिनियों के आंतक से मुक्त कराया था तब नर बलि की मांग की। तब यह निश्चित हुआ था कि पत्थर मार कर एक इनसान के खून के बराबर खून बहा कर देवी को तृप्त किया जाएगा। उस समय से ही लोग हर साल यहां मैदान में जुट कर कुछ समय के लिए एकदूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। इस खेल में जब मंदिर के पुजारी को विश्वास हो जाता है कि इनसान के बराबर खुन बह गया है तब वह इसे रोकने की घोषणा करता है। अब कौन सा ऐसा धर्म है जो आस्था के नाम पर एक आदमी को दूसरे का खून बहाने को कहता है?

हर सार सैकड़ों की तादाद में लोग इस खूनी खेल में घायल हो जाते हैं मगर पंडेपुजारियों के बहकावे में आ कर सब भूल जाते हैं। इसी तरह का एक और मेला मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में लगता है। इस मेले को गोटमार मेला कहा जाता है। यहां भी हर साल 2 गांव, पनधुरा और स्वरगांव के लोग एकदूसरे पर पत्थरों से हमला करते हैं। इस मेले को लगभग 300 साल पुराना बताया जाता है।

यहां मान्यता है कि पनधुरा के राजा ने जब स्वरगांव की राजकुमारी को अपने साथ ले जाना चाहा था तब स्वरगांव के लोगों ने राजा पर पत्थर से हमला किया था पर चंडी देवी की कृपा से राजा बच गया। इसी के बाद यहां देवी का एक मंदिर बना, और तब से हर साल पत्थर मारने की यह प्रथा चली आ रही है। अब इस प्रथा के जरिए दोनों गांवों के युवा, अपने लिए दुलहन जीत में हासिल करते हैं। हर साल यहां लोग नदी के पास के मैदान पर एकत्र हो कर एकदूसरे पर

पत्थरों से हमला करते हैं। बताया जाता है कि पिछले साल इस खेल में लगभग 800 लोग घायल हुए थे और एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। इस को देखते हुए प्रशासन ने इस पर रोक लगा दी थी, लेकिन लोगों की मांग पर अब रोक हटा ली गई है।

हिंदू धर्म शास्त्रों में कहीं भी हिंसा को सही नहीं माना गया है। अहिंसा को ही यहां परम धर्म माना गया है। छान्दोग्य उपनिषद में भी कलियुग में हिंदू वैदिक रीति के नाम पर होने वाली हिंसा को सही नहीं ठहराया गया है। साथ ही पशु बलि का भी निषेध बताया गया है। इस के बाद भी समाज में अभी तक ऐसी मान्यताओं और इन के नाम पर होने वाली हिंसा लगातार जारी है।

इस से साफ हो जाता है कि ऐसे मेलों का आयोजन केवल रूढ़िवादी मान्यताओं और झूठी कहानियों के बल पर लोगों का धर्म के नाम पर गुमराह कर केवल पैसा बटोरने की कोशिश से ज्यादा और कुछ नहीं है। ऐसे आयोजन के चलते इन जगहों पर पर्यटक पहुंचते हैं, जिस से लाखों का चढ़ावा आता है। इस के अलावा आसपास के गांवों के लोग आते हैं जिस से व्यापार बढ़ता है। इन्हीं कारणों के चलते धर्म के ठेकेदार ऐसे आयोजनों को बंद नहीं होने देना चाहते ताकि उन की धर्म की दुकान चलती रहे।

इनसान के जन्म के साथ ही धार्मिक कर्मकांडों की जो घुट्टी उसे पिलाई जाती है उस का सदियों पुराना इतिहास है। हजारों सालों से अंधविश्वास समाज और उस की मान्सिकता में भरा हुआ है। अगर इस में थोड़ा सा भी परिवर्तन आने लगता है तो यही धर्म के सौदागर आगे आ कर लोगों को देवीदेवताओं के प्रकोप से डराने लगते हैं, ताकि समाज में कहीं से उन का बुना हुआ धार्मिक जाल टूटने न लगे यह भारतीय समाज की विंडबना है कि यहां पढ़ेलिखे लोग भी इस तरह के प्रपंचों में पड़ कर अपनी वा दूसरों की जान जोखिम में डालते हैं।

केवल ये उदाहरण नहीं हैं, जो भारतीय समाज और हिंदू धर्म में अंधविश्वास को दर्शाते हैं बल्कि भारत के कोनेकोने में धर्म की आड़ में दुकानदारी चल रही है। इस तरह के पाखंड समाज को दीमक की तरह चाट रहे हैं, जिन से समाज की सोचनेसमझने की ताकत खोखली होती जा रही है।

(सरिता से संभार)

शोक समाचार

2. बहुत शोक कि श्रीमान गोकुल चन्द जी गूना का (मध्य प्रदेश) पिछले दिनों गूना में देहान्त हो गया। आप कोई 74 - 75 वर्ष के थे। आपका एक बेटा और दो बेटियां है। आप अपनी योग्य धर्म पत्नी श्रीमती महिन्द्रा जी समेत कई वर्षों से देव समाज भवन 36 - बी चण्डीगढ़ में सेवा रत थे। पहले महिन्द्रा जी का यहा देहान्त हुआ। उनकी मौत के बाद भी आप ज्यादातर यहीं रहे और देव समाज का हितकर साहित्य फैलाने का काम करते रहे। उनको हार्ट की तकलीफ शुरू हुई, और अप्रेशन करवाते हुए उनकी उमर उनका साथ छोड़ गई।

आप बहुत नेक, नम्र, श्रद्धावान, सेवाकारी, भक्त वा खामोश सेवक थे। उनके चले जाने से परिवार वा समाज को बहुत घाटा पड़ा है। हम कामना करते हैं कि परलोक में उन्हें सहायकारी सामान मिलें उनके आत्मा को शान्ति मिले और उनके परिवारिक जनों को धैर्य मिले।

बलदेव सिंह

मानवता के गौरव

हम प्रतिदिन देश में हो रहे भृष्टाचार, बलात्कार वा अन्य जघन्य अपराधों को पढ़ते हैं, सुनते हैं, तो हमारे सामने समाज की भद्दी तस्वीर बनती है। परन्तु इसी मानव जगत मे ऐसे मोती भी बिख़रे पड़े हैं जो अपनी ईमानदारी, मेहनत वा लग्न से इतिहास रचते रहते हैं। ऐसे ही कुछ मोती चुनकर हम नीचे दे रहे हैं ताकि हम आजकल मनुष्य जगत के सम्बन्धी दिनों में ऐसे जनों के बारे में पढ़ें जो दुनियां के पद पोज़ीशनों से ही काम नहीं कर रहे, बल्कि उनके सामने विशाल संसार है, जिसमें वह अपनी अनुपम छटा बिख़ेरते हैं। हम इन्हें पढ़कर अवश्य कुछ करने की प्रेरणा लेंगे।

आनंद कुमार पटना में गरीब छात्रों के लिए सुपर 30 आईआईटी कोचिंग स्कूल चलाते हैं, इस स्कूल में बिहार के अति गरीब वर्ग के मेधावी छात्र- छात्राओं को आईआईटी की प्रवेश परीक्षा के लिए नि-शुल्क कोचिंग, खाना व रहने का स्थान दिया जाता है, आज पूरे बिहार में पिछले तीन सालों से आईआईटी प्रवेश परीक्षा में सफल रहे हैं,

आनंद कुमार को पहली बार देखने पर ऐसा लगता है जैसे वह कोई छोटी-मोटी दुकान का मालिक हो। साधारण वेशभूषा व बिना कटी दाढ़ी। देखकर नहीं लगता कि लगातार तीन साल से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) की प्रवेश परीक्षा में आनंद कुमार के पढ़ाए हुए गरीब बच्चे बाजी मार रहे हैं।

अन्य भारतीयों की तरह आंनद की आंखों में भी युवा सपने थे, अच्छी पढ़ाई करके परिवार को गरीबी के अभिशाप से मुक्त करने के सपने। उन्होंने गणित से बी. ए. आनर्स किया और उन्हें लंदन की केंब्रिज यूनिवर्सिटी की स्नातकोत्तर पदवी के लिए स्वीकार कर लिया गया, तभी भाग्य ने पलटा खाया, पोस्ट विभाग में लिपिक उनके पिता का देहान्त हो गया, आनंद कुमार के लिए कैंब्रिज दूर का सपना हो गया, रिश्तेदारों और मित्रों ने उन्हें पिता की नौकरी दिलाने के प्रयास शुरू कर दिए पर आनंद इस विचार से सहमत नहीं थे, क्योंकि उनकी इच्छा एक गणितज्ञ बनने की थी। अपने इस स्वप्न के लिए आनंद ने सुरक्षित सरकारी नौकरी का बलिदान कर दिया।

पापड़वाले से टीचर तक

उस समय आनंद की उम्र थी 21 वर्ष, छोटा भाई 19 वर्ष का प्रणब वाराणसी में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। अतीत की याद करते हुए आनंद बताते हैं, 'मां पापड़ बनाती थी और मैं दरवाजे-दरवाजे जाकर बेचता था। हम इसे आनंद पापड़ कहकर बुलाते थे'।

बहुत कठिन समय था। हर दिन साइकिल पर दो बैग पापड़ लेकर आनंद घर से निकलते और शाम को पापड़ बेचकर ही घर वापस लौटते। पैसा बचाने के लिए टेलीफोन कनेक्शन वापिस कर दिया, दूध और रोज का अखबार भी बंद कर दिया। 1994 की बात है, पटना के स्वामी विवेकानंद सेवाश्रम में आनंद ने 400 रूपए प्रतिमाह पर एक कमरा किराए पर लेकर उसमें गणित का टयूशन सेंटर शुरू कर दिया। प्रारंभ में वहां मात्र दो बच्चे थे। आनंद की फीस 400 रूपए प्रति छात्र प्रति वर्ष थी। वह पढ़ाने के बाद पापड़ बेचने चले जाते। धीरे-ध

ीरे एक अच्छे टीचर की उनकी छवि और छात्रों को टयूशन सेंटर तक खींचने में सफल रही। तीन साल बाद उन्होंने पापड़ बेचना बंद कर दिया। टेलीफोन कनेक्शन फिर जुड़ गया और दूध व अखबार भी फिर शुरू हो गए। 2001 में उनकी फीस 24सौ रूपए प्रति वर्ष थी जो अब बढ़कर 5 हजार प्रतिवर्ष हो गई है। प्रख्यात गणितज्ञ श्रीनिवास रामनुजन के नाम से चल रहे आनंद के टयूशन सेंटर में इस समय 300 से अधिक छात्र शिक्षा का लाभ ले रहे हैं।

सुपर - 30 का जन्म

सुपर - 30 कोचिंग सेंटर शुरू करने का विचार आनंद को 2001 में तब आया जब एक गरीब छात्र ने उनसे 24सौ वार्षिक फीस दे पाने में असमर्थता व्यक्त की। तब आनंद ने सुपर - 30 इंस्टीटयूट की स्थापना अति गरीब छात्रों को पढ़ाने के लिए की। उन्हें आई आई टी में प्रवेश के लिए तैयार करने के लिए की। सुपर - 30 में प्रवेश के लिए एक ही शर्त थी कि छात्र पढ़ने में तेज व प्रतिभावान हों। सुपर - 30 की खबर आनंद के गणित कोचिंग सेंटर में पढ़नेवाली छात्रों के जरिए फैल गई और उन्हें सुपर - 30 में प्रवेश के लिए आठ सौ से अधिक आवेदन प्राप्त हुए। आवेदन शुल्क 20 रूपए था। एक प्रवेश परीक्षा की गई और आठ सौ में से छात्र छांटे गए। इन सभी छात्रों की परिवारिक आर्थिक हालत का परीक्षण किया गया और फिर जो गरीब से गरीब थे, उन छात्रों को आई आई टी प्रवेश कोचिंग के लिए चुन लिया गया।

शिक्षण प्रणाली व परिणाम

सुपर - 30 के छात्रों को सालभर कोचिंग दी जाती है। उन्हें आनंद के घर पर बना खाना मुफत दिया जाता है और उन्हें शहर में भिन्न - भिन्न स्थानों पर किराए के कमरों में रखा जाता है। पिछले ग्रुप में शामिल दो लड़कियों को गर्ल्स होस्टल में रखा गया था। सुपर - 30 के छात्रों को सप्ताह में 5 दिन शाम 5 से 8 बजे तक पढ़ाया जाता है। जब वे पढ़ते या आपस में ग्रुप डिस्कशन करते हैं तभी उनका टेस्ट होता है। यह टेस्ट प्रतिदिन लिया जाता है। सुपर - 30 के दो अन्य टीचर प्रवीण कुमार तथा अमित कुमार हैं। आईआईटी - जेईई की प्रवेश परीक्षा में सुपर - 30 का पहला बैच 2003 में शामिल हुआ। तब 30 में 24 छात्र सफल रहे थे। 2004 में 22 छात्र, 2004 में 26 तथा 2006 में 28 छात्र सफल रहे। वर्ष 2004 - 09 तथा 2010 की आईआईटी - जेईई प्रवेश परीक्षा में सुपर - 30 के सभी छात्र सफल रहे।

नए सपने

सुपर - 30 माध्यम से बिहार के 30 गरीब छात्र - छात्राओं को आईआईटी - जेईई के प्रतिष्ठित पाठचक्रम में प्रवेश दिलाने का काम सफलता से पूरा करनेवाले आनंद के सपने अभी खत्म नहीं हुए हैं। अब आनंद कक्षा 6 से आगे की पढ़ाई तक का एक स्कूल खोलना चाहते हैं। वे गणित व फिजिक्स ओलंपियाड में हिस्सा लेनेवाले प्रतियोगियों को भी पढ़ाना चाहते हैं। आनंद बड़ी विनम्रता से कहते हैं कि मैं चाहता हूं कि मेरा कोई एक छात्र नोबल पुरस्कार जीते। अब आनंद की आर्थिक सहायता करने के लिए कई लोग आ रहे हैं पर आनंद सहज विनम्रता में मदद लेने से इंकार कर देते हैं। आनंद बताते हैं कि जब मैं स्कूल की इमारत बनवाना शुरू करूंगा तब लोगों की मदद लूंगा। आनंद की सुरक्षा के लिए दो गार्ड भी हैं। दरअसल एक स्थानीय गुंडा

चाहता था कि आनंद सुपर-30 इंस्टीटयुट न चलाएं, पर आनंद नहीं माने। तब आनंद पर हमला किया गया। घर के दरवाजे पर ही उनके एक साथी को छुरा घोंपा गया। घर पर बम फेंका गया और गोलियां भी चलाई गई, पर आनंद खुद को बचाने में सफल रहे। इस घटना के बाद पुलिस ने उन्हें सुरक्षा उपलब्ध कराई है। धन्य हैं, इतने निडर व्यक्ति!

होनहार बिरवान

अनूप कुमार बिहार के औरंगाबाद जिले के चिउल गांव का रहनेवाला है। उसके पिता कपड़े की दुकान चलाते थे लेकिन चार साल पहले वे गायब हो गए। अनूप बताता है कि मेरा परिवार जमीन के टुकड़े पर खेती व टयूशन पर जिंदा है। अनूप का बड़ा भाई टयूशन पढ़ाता है। अनूप ने सुपर-30 के बारे में अखबारों पढ़ा था और अपने दोस्त के माध्यम से फार्म मंगाया था। उसने अपनी पढ़ाई हिंदी माध्यम से की है।

मोहम्मद शादाब आजम गया जिले के बेलहरिया गांव का रहनेवाला है। वह भी हिंदी माध्यम के स्कूल से पढ़कर सुपर-30 पहुंचा है। उसके पिता गांव में टाइपिंग सिखाते हैं। वह बताता है कि आजकल कोई भी छात्र टाइपिंग नहीं सीखना चाहता। यद्यपि सुपर-30 के क्लास हिंदी में लिए जाते हैं, छात्र अपने नोट्स अंग्रेजी में तैयार करते हैं। वह कहता है कि सुपर-30 एक परिवार की तरह है।

शुभम कुमार गौतम कुलती जिले का है। उसके पिता शिक्षित किसान हैं। शुभम के चाचा ने सुपर-30 के बारे में सुन रखा था। एक बार पटना आए तो आवेदन पत्र साथ ले गए। शुभम बताता है कि उसका सारा खाना सर के घर से बनकर आता है। यहां एक स्टोव है। जिस पर हम कभी-कभी चूड़ा या चपाती बना लेते हैं और घुगरी के साथ खाते हैं। हम सिनेमा नहीं देखते। यहां टेलीविजन और अखबार भी नहीं है।

विश्वराज आनंद 2001 मे आईआईटी में प्रवेश लेनेवाले सुपर-30 के छात्र रहे हैं। वह आईआईटी-पटना से कम्प्यूटर साइंस का कोर्स कर रहा है। वह पटना के हसनपुरा गांव का है। उसकी तीन बड़ी बहने हैं। उनमें से दो ने सरकारी इजीनियरिंग कालेज में प्रवेश का प्रयास किया था पर असफल रहीं। इससे सीख लेकर विश्वराज ने कड़ी मेहनत की सफल रहा। उसके पिता एक कांपनी में काम करते हैं और ट्रांसफार्मर बनाते हैं। एक बैंक से कर्ज लेकर उसने आईआईटी की फीस भरी है। आईआईटी के बाद विश्वराज की योजना आईएएस परीक्षा देने की है। वह आईएएस बनना चाहता है। वह कहता है कि परिवर्तन होना जरूरी है और मुझमें सिस्टम को बदलने की क्षमता मौजूद है।

नर्मदा केमिकल इंजीनियरिंग का कोर्स कर रही है और उसे आईआईटी से मैरिट स्कालरशिप भी मंजूर हुई है। उसकी फीस में 24 हजार रूपए का अनुदान मिलता है। उसे प्रतिमाह हजार रूपए छात्रवृत्ति भी मिलती है।

सुपर-30 मे बिहार की गरीब मेधा के स्वप्न साकार होते है। यह एक आदर्शवादी की समाजोन्मुख सोच का परिणाम है। आनंद दूसरों के जीवन में आनंद बिखेर रहे हैं।

ऐसे ही कुछ समाज सेवियों के विषय में अगले अंको में दे सकेंगे।

लोकतन्त्र का बिगड़ता चेहरा

कहने को सब प्रबन्ध लोकतन्त्रता की पालना करने का ढकोंसला करते हैं। परन्तु हर स्थान पर वोटों के ज़ोर पर सचाई का साथ देने वालों का गला घोंटा जाता है। स्वार्थी तत्व नहीं चाहते कि कोई ईमानदार, सच्चा वा कर्मठ व्यक्ति आगे आए या उसके आगे होने का अन्देशा भी हो। वह नहीं चाहते कि कोई समाज, धर्म वा देश के हित में उनकी इच्छा के विरूद्ध मुंह खोले। इसकी उदाहरणें हर धर्म, समाज वा विशेष रूप से हमारे देश में आम हैं। कनल की ने लेख लिखे थे, जो किताब के रूप मे प्रकाशित हो चुके हैं कि "महान कारज कैसे नष्ट हो जाते हैं?" उसका सबसे बड़ा कारण हर स्थान पर स्वार्थ, ईर्षा द्वेष, सत्ता लोलुपता ही होती है। निक्म्में, बेईमान, लूटकर खाने वाले क्योंकर सहन कर सकते हैं कि उनकी तूती बोलने में कोई विघ्नकारी हो इसी कारण से हर स्थान पर समाजों वा धार्मिक संगठनों का भी पतन हो जाता है।

14 अक्तूबर को पंजाब के इतिहास में भी एक ऐसी ही घटना घटी। मनप्रीत बादल पंजाब के वित्तमन्त्री रहे हैं। वह बेहद शरीफ, ईमानदार, विद्वान वा अकाली दल के कर्मठ सिपाही रहे हैं। पंजाब वित्तिय तौर पर कर्जे में डूबा हुआ है। उन्होंने कितनी बार सुझाव दिए कि यदि सबसिडी बन्द कर दी जाए, तो पंजाब कुछ उभर सकता है, वित्त विभाग की जानकारी रखते हुए उन्हें दिख रहा था कि खज़ाना खाली हो रहा है, परन्तु उनके पंजाब के हित में इस सुझाव को न केवल दरकिनार किया गया बल्कि उनकी खूब अलोचना की गई, उनके नेक इरादे को पार्टी विरोधी करार दिया गया।

अब जब उन्होंने पंजाब के कर्जे को मुआफ करवाने के लिए केन्द्र के साथ बातचीत की और उनकी सहमति भी मिल रही थीं, तो उनके बढ़ते राजनैतिक कद को देखते हुए उसे भी झूठ का पुलिन्दा कहकर उन्हें नकारा गया, उन्हें मन्त्री पद से बर्खास्त कर दिया गया और शायद उससे पहले उन्होंने अपना इस्तीफा भेज दिया उन पर आरोप लगाया गया कि कर्ज़ मुआफी के मुद्दे पर वह लोगों को गुमराह कर रहे हैं।

मुख्य मन्त्री प्रकाश सिंह बादल को इस्तीफा भेजते हुए उन्होंने भावपूर्ण शब्दों में पत्र लिखा कि पंजाब को कर्ज़ से निकालने के लिए कोशिशों के चलते पार्टी नेताओं की संर्कीण सोच ने उनका जीना मुहाल कर दिया था। मन्त्री पद छोड़ने के बारे में उन्होंने कहा: -

"ओहदे अहम नहीं होते, प्रतिष्टा अहमियत रखती है, मन्त्री की कुर्सी ज़रूरी नहीं, आदर सत्कार ज़रूरी है।"

आज के स्वार्थी युग में गधे को बाप कहना आम बात है। कल तक जो एक दूसरे का मुहं नहीं देखना चाहते, वह अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के तलवे चाटने लगते हैं। बहुत कम लोग हैं जो अपने आत्म सम्मान को स्वार्थ से ऊपर रख सकते हैं।

पंजाब में शायद इस समय पहला ऐसा नेता है कि जो कोई Security की परवाह नहीं करता, कहीं भी खुद कार चलाकर पहुंच जाता है, वह साहित्य पढ़ने का दिवाना है।

डाक्टर चन्द्र त्रिखा एक लेखक है, जिन्होंने मनप्रीत बादल के इस्तीफे के बाद लिखा है: -

"मनप्रीत या अन्य विद्रोही राजनेता फैज़ या इकबाल के ईलावा सचिन या हरियाणा की बेटी कृष्णा पुनियां से बहुत कुछ सीख सकते हैं। कृष्णा पुनियां ने जब महारन नायक मिलख़ा सिंह की एक उपलब्धि को पीछे छोड़ा तो उसकी आंखों में एक अलग किस्म की उपलब्धि दर्ज हो रही थी। उसे लगा था कि "सितारों से आगे जहां और भी है" उधर सचिन जब महानायकत्व का शिखर चूम रहे थे, तो उनकी एक आंख बाल पर थी, दूसरी अपने

बैट पर। बाल बैट की अनूठी जुगलबन्दी पर क्रिकेट का राग गाते गाते सचिन ने अपनी दोनों आंखें उस अनन्त आकाश में गड़ा दी, जिसमें अभी भी ढेरों संभावनाएं मौजूद हैं। आने वाला कल ऐसे ही युवाओं की प्रतीक्षा में है, जो उसकी झोली उपलब्धि यों से भर दे। यह उपलब्धियां, समझौतों की स्याही से नहीं लिखी जाती। तयशुदा लक्ष्यों को भेदना होता है। परन्तु राजनीति में सबसे बड़ी कमी यही होती है कि उसमें लक्ष्य भी सीमित होते हैं और उपलब्धियां भी सतही होती हैं।"

"हमारे परिवेश में पूजा एंव सलामी सिर्फ महानायकों के लिए निर्धारित होती है। छोटे छोटे लक्ष्य बेमानी होने लगते है। इस रास्ते पर धाराओं के विपरीत अपनी नौकाओं का खेना होता है, जो जूझता है, वही जीत जाता है।

'मता-ए-लौहों कलम छिन गई, तो क्या ग़म है,
खूने दिल मे डुबो ली है उंगलियां हमने'।"

अर्थात कुछ स्वार्थी, ईर्षा परायण तत्व यदि कोई पद या ओहदा छीन भी ले, काम करने वाले अनेकों संभावनाएं तलाश लेते हैं और शायद नेचर ही ऐसा रास्ता तलाशती है कि दमघेटू वातावरण से बाहर आकर वह खुलकर अपनी योगयताओं का प्रदर्शन कर सकें।

मनप्रीत बादल ने ब्यान दिया था कि सचाई के लिए बहुगिणती ज़रूरी नहीं। गलेलियों के यह कहने पर कि धरती सूरज के चारों ओर घूमती है, उसको Torture किया गया, परन्तु वह ठीक था, अब सारा संसार उसका समर्थन करता है।

उन्होंने यह भी लिखा था शरोमिणी अकाली दल वह दल नहीं रहा, जो अंग्रेजों के आगे भी नहीं झुका था, यह अकाली दल कमज़ोर है, जो पंजाब की आर्थिक अवस्था पर विचार करने के भी तैय्यार नहीं।

ऐनासटाईन ने कहा था, " महान आत्माओं को साधारण इन्सानों द्वारा असह्य विरोधता का सामना करना पड़ता है।"

मनप्रीत सिंह बादल को निकाले जाने पर कुछ साथी उनके हक में खड़े हो गए, विशेष रूप से सन्त अजीत सिंह जी ने तो यहां तक कहा था कि कुछ हो जाए मैं मनप्रीत बादल का साथ नहीं छोड़ूगा, क्योंकि वह एक सच्चा वा ईमानदार व्यक्ति है।

परन्तु कुछ ही दिनों में वह ईमानदार आदमी को छोड़ गए। सचाई का साथ देने वा उस पर डटे रहने वाले सूरमा और होते हैं। स्वार्थी आदमी ऐसे आदमियों के क्या क्या स्वार्थ पूरे करते हैं उनके कानों में क्या क्या ज़हर भरते हैं और उन्हें सचाई का विरोधी बना लेते हैं। यह उनका कसूर नहीं जो एक बार सचाई के साथ खड़ा होता है, फिर बदलता है, उसका कसूर है। उसका स्वार्थ, उसकी कोई कमज़ोर कड़ी उनके हाथ आ जाती है, जिसका वह लाभ उठाते हैं।

हम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि आजकल मनप्रीत बादल किस अर्न्तदवन्द से गुज़र रहे होंगे। यह परिस्थिति हर सचाई का साथ देने वाले के जीवन में आती है, परन्तु जो डटा रहता है, वह कुछ न कुछ अवश्य बेहतर कर गुज़रता है, सबसे बढ़कर आत्म सन्तुष्टि तो प्राप्त कर लेता है कि उसने ठीक मार्ग को नहीं छोड़ा।

मनप्रीत बादल के साथ हमारी शुभकामनाएं है कि शायद वह नशों और कर्ज़ में डूबे पंजाब के लिए आशा की नई किरण सिद्ध हों। जब इरादे बुलन्द हो तो सहायकारी शक्तियां सहायता करती हैं। एक फिल्म में डायलाग था कि "यदि किसी चीज़ को दिल से चाहो, तो पूरी कायनात तुम्हें उससे मिलाने की कोशिश में लग जाती है" असल बात यह है कि आप अपने हितकर लक्ष्य को पाने के लिए किस हद तक जाते हो। प्रकृति का यह नियम है कि पहले आपके मार्ग में अवरोध आएंगे, यदि आप उन अवरोधों में से गुजरने की हिम्मत रखते हों, तो प्रकृति भी धीरे-धीरे तालमेल बिठाकर,

आपकी राह आसान बनाने लगती हैं, शर्त यह है कि लक्ष्य भलाई का हो तो कई जाने अनजाने लोग आपके मददगार बनने लगते है, आपके ईरादों को गति मिलती है। आपके मार्ग की रूकावटें दूर होने लगती हैं, पहले जो आपको तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे वह धीरे धीरे आपके साथी वा प्रशंसक बनने लगते हैं।

मनप्रीत बादल भी शायद अपने मजबूत इरादों से लोक तन्त्र के बिगड़ते चेहरे को कुछ संवार सके।

सुरजीत बराड़

कुदरत का अन्मोल तोहफा मथी

भोजन का स्वाद वा खुशबू बढ़ाने के लिए मेथी का प्रयोग हर घर मे किया जाता है। मेथी की सब्ज़ी और दानों को मसालों के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिकों के अनुसार मेथी के पत्तों में 9.8% कार्बोहाड्रिटस 4.9% प्रोटीन, 8.18% पानी, 1.6% खनिज पदार्थ, 1.0% फाईबर, 0.9% फैट और लोहा 16.19 मिलीग्राम प्रति सौर ग्राम में पाया जाता है। मेथी के दानों में 25% फासफोरिक ऐसिड, गूंदे, लेसीथीन प्रोटीन, कोलाईन और ट्राईगोनेलिन ऐलके हालईडज़ पाए जाते है। मेथी के सूखे पत्तों में प्रोटीन की मात्रा लगभग 16 प्रतिशत होती है। इसके भिन्न मेथी में बहुत लाभ कारी एंजाईमज़ भी पाए जाते है। आयुर्वेद के अनुसार मेथी की तासीर गर्म, स्वाद कड़वा और गुण बहुत अधिक हैं। यह वात, कफ, ताप नाशक होती है। यह पेट में कीड़ों का होना, भूख न लगना, कब्ज़, मोटापा, शक्कर रोग, गठिया आदि रोगों में लाभदायक है। कमज़ोर सैक्स के मरीज़ों की ताकत बढ़ाने के लिए भी मेथी का प्रयोग किया जाता है।

मेथी पेट और हाज़में और पेट समस्याओं को दूर करने में मेथी गैस और पेट दर्द दूर करने में सहायता करती है। यह एसडिटी को दूर करती है और अपैंडिक्स में मिली हुई गन्दगी को भी साफ करती है। कब्ज़ दूर करने के लिए सर्दी में सुबह शाम मौसम के अनुसार मेथी की सब्ज़ी खानी चाहिए। रात को सोते समय मेथी के दाने पानी से निगलने चाहिए। मेथी के पानी को दांतों पर रगड़ने से दांत मज़बूत होते है। मेथी के दाने के काढ़े से दिन में 2 - 3 बार गरारे करने से गले की सूजन, दर्द और टांसल की बिमारी भी दूर होती है।

मेथी की सब्ज़ी खाने से खून की कमी भी दूर हेती है। पेचिश, पथरी, रक्तचाप, अधिक पेशाब आना या मान्सिक परेशानी को दूर करने के लिए मेथी का काढ़ा और चूर्ण लाभ दायक है।

अन्दरूनी चोटों पर मेथी के पत्ते पीसकर लेप करने से सूजन दूर होती है। मेथी दाने का चूर्ण एक चमच सुबह शाम लेने से घुटने, जोड़ों, गठिए आदि में आराम मिलता है। मेथी के लड्डू सुबह खाने से कमर दर्द में लाभ होता है। सर्दी, ज़ुकाम और दुखों को दूर करने में मेथी सहायता करती है। रात को सोते समय पीसकर मेथी का लेप करने से बालों की जड़ें मजबूत होती हैं।

मेथी में पेशाब में गुलूकोज़ की मात्रा को कम करने का विशेष गुण है। मेथी का चूर्ण दूध में मिलाकर पीना चाहिए। सूखे जामुन के बीजों के साथ मेथी पीस कर रात को लेने से शरीर में शूगर कम हो जाती है।

इसमें ट्रांसमेथाईमलिन नामक तत्व होता है जो शाकाहारी भोजन में मछली का विकल्प है। इसका लेसथिन नामक तत्व दिमाग़ की कमज़ोरी को दूर करता है।

भूख का न लगना, अधिक पेशाब आना, दमा पेट और मांसपेशियों में एक चमच मेथी दाने तीन बार लेने से लाभ होता है

मुबारक हो

जैसा कि सब जानते हैं कामन वैलथ गेमज़ 3 अक्तूबर से 14 अक्तूबर तक कराई गई। हमारी सरकार इनको करवाने के लिए जिस संर्घष में से गुजरी, वह किसी से छुपा नहीं। वर्षा ने दिल्ली को बेहाल रखा। कुछ ग़ैरज़िम्मेवार, बेईमान जनों ने जिन पर सारा दायत्वि था, निराश किया। सबसे दुखदाई बात तब लगी, जब एक जिम्मेवार oposition के नेता ने यह ब्यान दिया कि हम खुश होंगे यदि यह खेल ठीक ढंग से न हो सके , तो सरकार को एक सबक मिल जाएगा।

इस ब्यान ने हर भारतवासी का सिर झुका दिया होगा कि हम दूसरों को नीचा दिखाने के लिए इस हद तक गिर सकते हैं कि अपने देश को दूसरे देशों के सामने शंर्मिदा होते देखने में भी हमें कोई शर्म नहीं रहती। भारत माता की जय के नारे लगाएंगे, परन्तु अपनी पार्टी, अपना स्वार्थ मुख्य रखकर भारत का मुंह काला होते देखकर खुशी मनाएंगे, कैसी विडम्बना!

हम सरकार को मुबारकबाद देते हैं, जिसने बहुत विरोधी हालात में ऐसा शानदार प्रदर्शन दिखाया, प्रथम दिवस पर हमारी सभ्यता, हमारी Tecknowlogy, हमारा गीत, संगीत, आतिशबाजी हमारी कला, बच्चों का स्वागतगीत, क्या शानदार प्रदर्शन था, उसे देखकर हर सच्चे भारतिय का सिर गर्व से ऊंचा उठ रहा था। अलोचना करने वालों की आंखे खुली की खुली रह गई। और देशों से आए खिलाड़ी प्रफुल्लत मन से प्रशंसा के पुल बांध रहे थे। जब भारत के खिलाड़ी परेड में गुजरे तो सब देशों के नुमांयदे और 60,000 लोगों से भरा stadium था, सब ने खड़े होकर स्वागत किया, यहां तक कि पाकिस्तान के खिलाड़ियों का भी भारतवासियों ने खड़े होकर स्वागत किया, यह भारत की उदारता का प्रतीक है।

सरकार सच्ची मुबारकबाद की भागी तब होगी, जब इस सारे प्रबन्ध में जो भृष्टाचार हुआ है, उसको उजागर करे और अपराधियों को कड़ी से कड़ी सज़ा मिले। भारतवासियों की कड़ी मेहनत से आए धन को कुछ लोगों के स्वार्थ की भेंट न चढ़ाया जाए।

इससे आगे हमारी मुबारकबाद के वह सब खिलाड़ी हक़दार हैं, जिन्होंने कड़ी मेहनत करके मैडल जीते और भारत का सिर गर्व से ऊंचा किया। इनमें से कई गुमनाम थे, इस प्रतियोगिता में उन्हें नाम मिला। खेलों की समाप्ति के एक दिन पहले भारत जो दो नम्बर पर था, फिर इंगलैंड के Gold Medal लेने से तीसरे नम्बर पर चला गया, परन्तु हमारा सलाम है सायना नेहवाल को जिसने बहुत संघर्ष के बाद बैडमिन्टन में गोल्ड मैडल लिया और भारत को दूसरे पायदान पर फिर खड़ा कर दिया। वह क्या सुन्दर नज़ारा था! सारा स्टेडियम खुशी से झूम उठा। इन सबके हम अभारी हैं, जिन्होंने हमारा गर्व से सिर ऊंचा किया है।

समापन समारोह भी उतना ही भव्य था। हमारी संस्कृति का प्रदर्शन, अनुशासन, समय की पाबन्दी, एक एक आईटम की भव्यता खुशी और गर्व से भर रही थी। अन्त में हमारे गायकों ने और हज़ारों कलाकारों ने समय बांध किया, विदेशी बेबस झूम कर नाच रहे थे।

हमारी संस्कृति महान है, हमारे कलाकार महान हैं, हमारे खिलाड़ी जी जान लगा रहे हैं, यदि हमारे देश से भृष्टाचार समाप्त हो जाए, तो हमारा देश फिर सोने की चिड़िया बन सकता है। काश! ऐसा हो।

सुरजीत बराड़

शुभ संग्राम

मानसा :- 30 सितम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से मानसा डा० सुबोध गुप्ता जी के पास पहुंचे। टीचरज़ कलोनी में श्रीमान मनोज जी के घर रात को सभा रखी गई, जिसमें 30 - 32 जन शामिल हुए। सभा में बताया गया धर्मों के बेशुमार प्रचार के बावजूद मानवता कैसे पाप और बुराईयों की शिकार है। दुख, अपराध और विनाश का बाज़ार गर्म है। कोई धर्म इसलिए कारगर नहीं कि मनुष्य प्रकृति को समझने में भ्रान्ति हुई है। मनुष्य ब्रह्म स्वरूप नहीं, पाप वा मिथ्या स्वरूप है। जब तक मनुष्य को अपना नीच जीवन दिखाई नहीं देता, तब तक धर्म कितना ज़ोर लगावे, वह उनसे निकल नहीं सकता। दुरव और नर्क कम नही हो सकता, परम पू० भगवान देवात्मा नीच जीवन दिखाने की समर्थ्य रखते हैं। उसके ठोस उदाहरण दिए गए। नये साईसी धर्म को समझने की प्रेरणा की गई। कई जनों ने प्रभावित होकर खुशी प्रगट की।

पहली अक्तूबर सुबह फिर सभा की गई। अच्छे पढ़े लिखे जन इसमें शामिल हुए। इसमें बताया गया कि मनुष्य में सुख पाने की इच्छाएं बहुत हैं, परन्तु धर्म पाने की इच्छा नहीं। यदि इच्छा भी हो तो सच्चे धर्म की तलाश नहीं की जाती, बल्कि पूजा पाठ करने को ही धर्म समझा जाता हैं। धर्म अच्छे इन्सान बनने का नाम है। उच्च भावों से ही इन्सान भला बनता है। ईमानदारी, पवित्रता, सम्मान, दया और शुकरगुज़ारी आदि भावों के बिना कोई धर्म नहीं होता। उच्च भाव धारियों की संगत से जुड़कर योग्यतानुसार उच्च भाव पैदा होते हैं। गुरू महाराज उच्च भाव पैदा करने की पूर्ण समर्थ्य रखते हैं। सभापति जी ने इस उच्च संगत से जो कुछ पाया है, उसका श्रद्धापूर्वक वा हृदय स्पर्षिय भावों से ब्यान किया। और उच्च घटनाएं पेश की। कई जनों ने ऐसी संगत रखने वा संगत में पहुंचने की ज़ोरदार प्रेरणाओं को प्रगट किया। 11 बजे श्रीमान जी मल्लेका से आए साथियों के साथ मल्लेका के लिए रवाना हो गए।

मल्लेका :- रास्ते मे श्रीमती रमेश जी के परिवार को मिले। पहली अक्तूबर की रात को यहां सभा रखी गई। इसमें 60 - 65 जनों की हाज़री थी। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी यहां पहुंच गए। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। उन्होंने असली, जिन्दा, जाहली वा मुर्दा संगत के विषय में बताया। जो संगत मनुष्य का ध्यान अपनी ओर फेरे, मनुष्य की कमियां वा नीचता दिखाए, उसे नीच से उच्च बनाए, वही संगत ठीक है। जिससे कोई परिणाम पैदा हो। यदि उच्च परिवर्तन न आए तो वह संगत मुर्दा वा बेकार संगत है। परम पू० भगवान देवात्मा ने जो संगत पैदा की है, उसकी सच्ची महिमा गाई नहीं जा सकती। सभापति जी ने अपने सौभाग्य का वर्णन किया और अगले प्रोग्राम के विषय में बताया।

दो अक्तूबर की सुबह की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई इसमें बताया गया कि धर्म क्या है और कैसे प्राप्त होता है मिथ्या धर्म अन्धेरा पैदा करते हैं। उच्च बनने के बिना धर्म नहीं आता। उच्च भावों के बिना धर्म नहीं, धर्म भावों के बिना मनुष्य स्वार्थी होता है। थोड़ा ब्यान श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी किया।

शाम की सभा 8 बजे की गई। इसमें 60 - 65 जन हाजिर थे। इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कृतज्ञता के महत्व पर ब्यान किया। कृत्घनता की भयानक तस्वीर पेश की। कृत्घन मनुष्यों के जीवनों का वर्णन किया, सारा ब्यान बहुत प्रभावदायक था।

3 अक्तूबर :- यह सथा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने नेचर के महा विशाल रूप को समझाने का प्रयत्न किया। नेचर के अटल नियमों के बारे बताते हुए उन्होंने स्पष्ट किया नेचर का यह नियम है कि जो दूसरों के काम आते हैं, उनकी रक्षा होती है। जो परहानि करते हैं, उनका नाश होता है। चन्द मिन्ट श्रीमान बलदेव सिंह जी ने ब्यान किया।

वाड़ा खुर्द :- शाम को यहां पार्टी पंहुची, विशाल सरदाना जी के घर 4 बजे सभा की गई। मनुष्य किस प्रकार अपना असली रूप जाने। अपने शरीर, अपनी आत्मा और उसकी परिचालिक शक्तियों को जाने, इस पर ब्यान किया गया। इनको जाने बिना मनुष्य दुख वा नाश से बचाव नहीं हो सकता। 4 पढ़े लिखे नौजवानों ने अच्छा लाभ उठाया। 7 बजे शाम को यह पार्टी वापिस आई। श्रीमान ओम प्रकारश जी के घर भी मिला गया। उनका एक पोता सभा में शामिल होकर बहुत खुश हुआ।

रात को फिर सभा की गई। इसमें 85 - 90 के करीब जनों की हाज़री थी। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया कि नेचर में असरों का खेल जारी है। नीच और उच्च असरों का ज्ञान दिया। उनके अलग अलग परिणाम समझाए। परम पू० भगवान के असरों द्वारा मनुष्यों के जीवनों पर जादू से असर की बहुत सी घटनाएं बताई। कई जन सभा से सब प्रभावित हुए। बनी से भी 2 जन आकर शामिल हुए। चारों तरफ से बसों, कारों, ट्रेक्टरों, मोटरसाईकलों की भीड़ लग जाती रही।

4 अक्तूबर सुबह यहां आख़री सभा की गई। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि धर्म की मंजिलें क्या होती हैं। साधन करना वा पर सेवा करना ज़रूरी है। साधन कैसे करना है। पाठ विचार वा अपनी नीचता को देखना ज़रूरी है। सात्विक भाव पैदा करने हैं। इनके बिना नीच जीवन नहीं कटता और न ही उच्च जीवन पैदा होता है। यह सभा सबको अच्छी तरह समझा कर की गई। 1500 रू० दान में प्राप्त हुए। बाद में संगत में रसगुल्ले बांटे गए। जय ध्वनि के साथ यह सभा समाप्त हुई।

डबवाली :- श्रीमान बलदेव सिंह जी तीन और साथियों के साथ दुपहिर तक डब वाली पहुंचे। मन्दिर की सफाई आदि की गई। 6 बजे शाम को सभा की गई। इसमें धर्म की अवश्यकता और सच्चे धर्म के न होने से दुख और हानि प्राप्त होना अवश्यक है, इस विषय में ब्यान किया गया। धर्म प्राप्ति optional विषय नहीं, ज़रूरी विषय है। धर्म वहीन मनुष्य पशुओं से भी निकृष्ट है। गुरू महाराज सच्चे धर्म का दान देते हैं।

5 अक्तूबर :- सुबह 8 बजे की सभा में बताया गया कि मनुष्य में संसारिक सुखों सामानों वा सम्बन्धियों की ईच्छाएं तो बहुत पैदा होती हैं परन्तु धर्म प्राप्ति की ईच्छा नहीं होती। यदि किसी सौभाग्यवान जन में यह ईच्छा पैदा हो जावे तो उसको यह पता नहीं होता कि धर्म क्या है। नीच भावों से मोक्ष पाना और उच्च भावों को पैदा करना ही धर्म है, गुरू महाराज उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं, उसकी घटनाएं बताई गई।

मानसा :- 3.30 बजे सुबोध जी के परिवार को लेकर सभा कराई और बताया कि उच्च संगत और उच्च जीवन की अवश्यकता क्या है? परिवार ने बड़ा सहयोग दिया और शाम को श्रीमानजी चण्डीगढ़ पहुंच गए।

सहारनपुर :- श्रीमान बलदेव सिंह जी राकेश जी की प्रार्थना पर 13 अक्तूबर की रात को यहां पहुंचे। अगली सुबह एक सभा की गई। सभा में बताया गया कि हमें अपने बनने और बिगड़ने की सोझी होनी चाहिए। इस सोझी के बिना मनुष्य बेसुध रहता है। नीच गतियां जो हमारी हानि करती हैं, उनका बोध होना चाहिए नीच भाव अपनी तृप्ति के लिए हम से नीच गतियां करवाते हैं। उच्च गतियों के बिना भला नहीं होता। अच्छे काम, पर सेवा, सत्संग, साधन करके भी अधिकतर नीच गतियां होता हैं। उच्च भाव बढ़ने से ही यह विवेक पैदा होता है। गुरू महाराज के प्रभाव ही यह विवेक पैदा करते हैं।

फिर एक सभा 5 बजे की गई। इसमें मास्टर सोतम जी भी आ गए थे। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य को जो भाव चलाते हैं, उनका ज्ञान होना अवश्यक है, नहीं तो हानि, दुख वा नाश को प्राप्त होना आवश्यक है। भगवान की ज्योति के बिना यह ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता यह ज्योति नियम पूरा करने के बिना नहीं मिलती। अपने अहं अनुराग की भयानक तस्वीर देखने की अवश्यकता है।

15 अक्तूबर सुबह की सभा में बताया गया कि भगवान देवात्मा अद्वितीय हस्ती हैं। उन्होंने नई सचाईयां रोशन की हैं। पहली सचाई मनुष्यात्मा नीच और रोगी हैं, परन्तु उन्हें नीच रूप नज़र नहीं आता। पूजा पाठ से भी उसे अपना हानिकारक वा पापी रूप नज़र नहीं आता और न ही कोई धर्म उसको पाप जीवन से निकाल सकता है। गुरू महाराज अपनी ज्योति शक्ति द्वारा मनुष्य को उसका नीच, अपराधी, हानिकारक रूप दिखा सकते हैं और उससे निकाल सकते हैं। मनुष्यों का जीवन बदल सकते हैं। सुन्दर घटनाओं द्वारा गुरू कारज समझाया गया। 500 रू० दान, 100 रू० चन्दा अखबार प्राप्त हुए। दुपहिर बाद सुमन जी के पास पहुंचे। वहां से शाम तक कुआं खेड़ा पहुंच गए।

कुआंखेड़ा :- 15 अक्तूबर रात को यहां एक सभा की गई। देव रूप के अद्वितीय ज़हूर बारे बताया। मनुष्य के नीच रूप के विषय में बताया गया। वह अपनी वा दूसरों की हानि करता है। परन्तु मनुष्य को अपना यह रूप दिखाई नहीं देता। गुरू महाराज मनुष्य को उसका असल रूप दिखाते हैं और उससे निकालने की क्षमता रखते हैं। गुरू महाराज के कारज की महिमा का वर्णन किया।

16 अक्तूबर :- सुबह 8.30 बजे की सभा में बताया गया कि यह जीवन नाशवान है, इसको सुख स्वादों की ख़ातिर बर्बाद न करो। धर्म के बिना जीना पशु समान है। अच्छे बेटे, अच्छे पति, अच्छे भाई वा बहन, अच्छे अफसर वा मताहित बनना ही धर्म है। औरंगजेब के विषय मे बताया गया। ज़मीन जायदाद के लिए पिता, भाई, भतीजे का कतल करने वाले नर्क पैदा करते हैं। बर्बाद होते हैं। बड़ा दुख आता है। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भगवान की कृपा से अपने सम्बन्धों की कथा सुनाई। सभापति जी के आंसु बह रहे थे। कई और जन भी आंसु बहा रहे थे। अच्छा वातावरण बना। हृदय अद्वितीय गुरू के चरणों मे झुक रहा था।

रात को फिर एक सभा की गई। इसमें नेचर का रूप समझाया गया। ईश्वर वा नेचर का अन्तर बताया गया। नेचर के नियम बताए गए। देव असरों क विषय में बताया गया। सत्संग की ज़रूरत बताई गई। सत्संग की बरकतें बताई गई। सत्संग की बेकदरी की हानियों की कोई सीमा नहीं। कुछ नये नौजवानों ने आकर लाभ उठाया।

17 अक्तूबर ईतवार की सुबह 8.30 बजे सभा की गई। अर्चन करके 2 भजनों का गान किया गया। इसमें सम्बन्ध तत्व के विषय में बताया गया। नहर का खेत के साथ सम्बन्ध बरकत पैदा करता है। अद्वितीय गुरू का सम्बन्ध परिवार को अजब बरकतें प्रदान करता है। समाज से केवल दो चीज़ों की मांग रखो, एक देव प्रभावों की, दूसरी परसेवा करने के अवसरों की। सभापति जी ने निजी बरकतों का हृदयगत भावों से ब्यान किया। हाजरीन वा सारे परिवार को गुरू महाराज से जुड़ने की प्रार्थना की। सब को महोत्सव पर पहुंचकर लाभ उठाने की प्रार्थना की। 650 रू० दान में प्राप्त हुए। यह आखरी सभा थी। वहां से श्रीमान जी 1 बजे के करीब रवाना हो गए।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts